JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1

मिरा—मर्यादा (पिनि २३७)।

मिरिआ—कुटी, झोंपडी (दे ६।१३२)।

मिलाण—पर्याण (औप ६४ टी)।

मिलिंदक—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

मिलिमिलिमिलंत—चमकता हुआ (प्र ३।५)।

मिसिमिसंत—अत्यन्त चमकता हुआ (औप ६३)।

मिसिमिसित—अत्यन्त चमकता हुआ—'वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणनिउणोविय-मिसिमिसितमणिरयणमंडियाओ' (दश्रु ८।१०)।

मिसिमिसेमाण—उत्तेजित—'कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा' (भ ३।४५)।

मिस्सिग—पूज्य—'अह उवज्झाओ से पिट्टेइ अपढंते ताहे साहेंति माइमिस्सिगाणं' (आवहाटी २ पृ १४२)।

मिहिआ—मेघसमूह (दे ६।१३२)।

मिहुज्जुहिय—विवाह का मंडप, वर-वधू का परिणयन-स्थल—'वधुवरपरिआणं ति मिहुज्जूहिया' (निचू ३ पृ ३४८)।

मीअ—समकाल, उसी समय (दे ६।१३३)।

मीढ—भास पक्षी—'भासो मीढसउणओ' (बृटी पृ २४८)।

मीरा—दीर्घ चुल्ली, बड़ा चूल्हा (सूनि ७६)। २ सीमा (निचू २ पृ १६६)

मीराकरण—द्वार को चटाई आदि से ढकना—'मीराकरणं नाम—कटैर्द्वारादेराच्छादनम्' (बृटी पृ ५९१)।

मीसालिअ—मिश्र, संयुक्त (दे ६।१३३ वृ)।

मुअंगी—चींटी (दे ६।१३४)।

मुआइणी—डुम्बी, चंडालिन (दे ६।१३५)।

मुइअ—योनिशुद्ध, निर्दोषमातृक—'मुइओ जो होइ जोणिसुद्धो त्ति' (औप १४ टी पृ २१)।

मुइअंगा—चींटी (पिनि ३५१)।

मुइंगा—चींटी (ओनि ५५८)।

मुईग—मकोडा—'मुईगत्ति देशीपदमेतत् मत्कोटवाचकम्' (व्यभा ३ टी प ७७)।

मुंगसी—नेवली (अंवि पृ ६९)।

मुंजापिच्चिय—मूंज को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (स्था ५।१९१)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com